1936E The meaning of the Arihants *(in Jain Darshan 1936 September)*

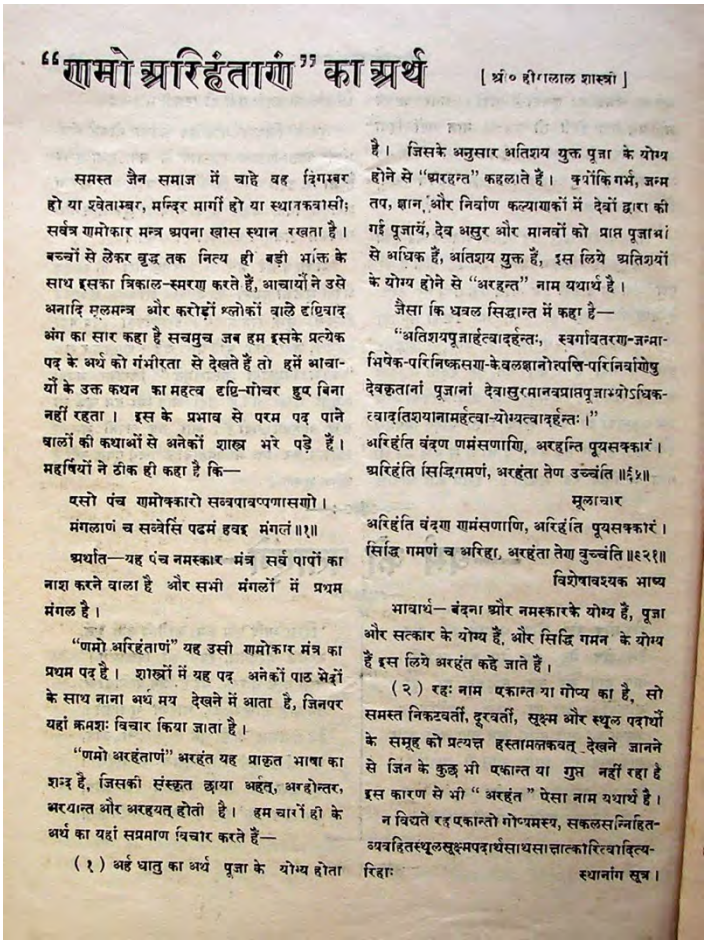

"णमो अरिहंताणं" का अर्थ

[श्री० हीरालाल शास्त्री]

समस्त जैन समाज में चाहे वह दिगम्बर हो या श्वेताम्बर, मन्दिर मार्गी हो या स्थानकवासी; सर्वत्र णमोकार मन्त्र अपना खास स्थान रखता है। बच्चों से लेकर वृद्ध तक नित्य ही बड़ी भक्ति के साथ इसका त्रिकाल-स्मरण करते हैं, आचार्यों ने उसे अनादि मूलमन्त्र और करोड़ों श्लोकों वाले दृष्टिवाद अंग का सार कहा है सचमुच जब हम इसके प्रत्येक पद के अर्थ को गंभीरता से देखते हैं तो हमें आचार्यों के उक्त कथन का महत्व दृष्टि-गोचर हुए बिना नहीं रहता। इस के प्रभाव से परम पद पाने वालों की कथाओं से अनेकों शास्त्र भरे पड़े हैं। महर्षियों ने ठीक ही कहा है कि—

एसो पंच णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

अर्थात—यह पंच नमस्कार मंत्र सर्व पापों का नाश करने वाला है और सभी मंगलों में प्रथम मंगल है।

"णमो अरिहंताणं" यह उसी णमोकार मंत्र का प्रथम पद है। शास्त्रों में यह पद अनेकों पाठ भेदों के साथ नाना अर्थ मय देखने में आता है, जिनपर यहां क्रमशः विचार किया जाता है।

"णमो अरहंताणं" अरहंत यह प्राकृत भाषा का शब्द है, जिसकी संस्कृत छाया अर्हत्, अरहोन्तर, अरयान्त और अरहयत् होती है। हम चारों ही के अर्थ का यहां सप्रमाण विचार करते हैं—

(१) अर्ह धातु का अर्थ पूजा के योग्य होता है। जिसके अनुसार अतिशय युक्त पूजा के योग्य होने से "अरहन्त" कहलाते हैं। क्योंकि गर्भ, जन्म तप, ज्ञान और निर्वाण कल्याणकों में देवों द्वारा की गई पूजायें, देव असुर और मानवों को प्राप्त पूजाओं से अधिक हैं, अतिशय युक्त हैं, इस लिये अतिशयों के योग्य होने से "अरहन्त" नाम यथार्थ है।

जैसा कि धवल सिद्धान्त में कहा है—

"अतिशयपूजार्हत्वादर्हन्तः, स्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाणेषु देवकृतानां पूजानां देवासुरमानवप्राप्तपूजाभ्योऽधिकत्वादतिशयानामर्हत्वा-योग्यत्वादर्हन्तः।"

अरिहंति वंदण णमंसणाणि, अरहन्ति पूयसक्कारं।
अरिहंति सिद्धिगमणं, अरहंता तेण उच्चंति ॥६५॥

मूलाचार

अरिहंति वंदण णमंसणाणि, अरिहंति पूयसक्कारं।
सिद्धि गमणं च अरिहा, अरहंता तेण वुच्चंति ॥६२१॥

विशेषावश्यक भाष्य

भावार्थ— वंदना और नमस्कारके योग्य हैं, पूजा और सत्कार के योग्य हैं, और सिद्धि गमन के योग्य हैं इस लिये अरहंत कहे जाते हैं।

(२) रहः नाम एकान्त या गोप्य का है, सो समस्त निकटवर्ती, दूरवर्ती, सूक्ष्म और स्थूल पदार्थों के समूह को प्रत्यक्ष हस्तामलकवत् देखने जानने से जिन के कुछ भी एकान्त या गुप्त नहीं रहा है इस कारण से भी "अरहंत" ऐसा नाम यथार्थ है।

न विद्यते रह एकान्तो गोप्यमस्य, सकलसन्निहित-व्यवहितस्थूलसूक्ष्मपदार्थसार्थसाक्षात्कारित्वादित्यरिहाः

स्थानांग सूत्र।

"अविद्यमानं रह एकान्तरूपो देशोऽन्तश्च मध्यं गिरिगुहादीनां सर्ववेदितया समस्तवस्तुस्तोमगत-प्रच्छन्नत्वस्याभावेन येषां तेऽरहोन्तरः। भगवती सूत्र

(३) अरथान्त ऐसी संस्कृत छायाके अनुसार यह अर्थ निकलता है कि—

रथ अर्थात् प्रकृत में उपलक्षण से "समस्त परिग्रह" का जिन के सर्वथा विनाश हो गया है, ऐसे वीतराग सर्वज्ञ देव को अरहंत कहते हैं।

"अविद्यमानो रथः स्यन्दनः सकलपरिग्रहोपलक्षणभूतः अन्तश्च विनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषां तेऽरथान्ताः"

भगवती सूत्र।

अथवा-जिनका आत्मा रूपी रथ अप्रतिहत शक्ति वाला होने से कहीं रुक नहीं सकता, अर्थात् त्रैलोक्य और अलोक को भी जानता है।

(४) "अरहंत" शब्द का अरहयत् अर्थ भी होता है, जिस के अनुसार यह अर्थ भी निकलता है "राग-द्वेष के कारणभूत त्रिलोकवर्ती अनंत पदार्थों के ज्ञाता दृष्टा होने पर भी किसी भी पदार्थ में आसक्त नहीं, वीतरागी स्वभाववाले हैं, इससे अरहंत कहलाते हैं।"

"क्वचिदपि आसक्तिमगच्छत्सु क्षीणरागत्वात् प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञेतरविषयसम्पर्केऽपि वीतरागत्वादिकं स्वस्वभावं अत्यजन्तोऽर्हन्तः"

भगवती सूत्र

अथवा—"णमो अरिहंताणं" ऐसा भी पाठ प्रचलित है जिस के अनुसार अर्थ होता है कि—अरि अर्थात् कर्म शत्रु के नाश करने से अरिहंत कहते हैं।

"अरिहननादरिहंतः, नरक तर्यक्कुमानुप्रेषता-वासगताशेषदुःखप्राप्तिनिमितत्वादरिर्मोहः। तस्यारेर्हननादरिहंतः"

धवल सिद्धान्त।

मोह रज अंतराए हणण गुणादो य णाम अरिहंतो॥

मूलाचार

अथवा—राग, द्वेष, कषाय, पाचों इन्द्रियों के विषय, परिषह और उपसर्ग उन के विनाश से भी अरिहंत कहे जाते हैं। जैसा कि लिखा है—

राग द्दोस कसाए य, इन्दियाणि य पंच य।
परिसहे उवसग्गे, णासयंतो णमोरिहा॥ मूलाचार
रागद्दोस कसाए य, इन्दियाणि य पंच विपरीसहे।
उवसग्गे नामयंता; नमोरिहा तेण वुच्चंति॥

विशेषावश्यक भाष्य

इन्दिय विसय कसाए, परीसहे वेयणा उवसग्गे।
एए अरिणो हंता अरिहंता तेण वुच्चंति॥ ११६

आवश्यक भाष्य

अट्ठ विहं पि य कम्मं, अरिभूयं होइ सव्व जीवाणं
तं कम्ममरिं हंता, अरिहंता तेण वुच्चंति॥ १२०॥

आवश्यकभाष्य

अथवा—रज अर्थात आवरण के नाश करने से भी अरहंत कहाते हैं, क्योंकि ज्ञानावरण दर्शनावरण कर्म रज के समान बाह्य और अंतरंग समस्त त्रिकाल के विषय भूत अनंत अर्थपर्याय और व्यंजन पर्याय युक्त वस्तुओं को विषय करने वाले ज्ञान और दर्शन को आवरण करने से रज कहे जाते हैं। इसी प्रकार मोह भी रज है, क्योंकि जैसे रज से व्याप्त मुख वाले लोगों में कार्य की मंदता देखी जाती है, उसी प्रकार मोह से जिनका आत्मा व्याप्त है—उनमें भी आत्मोपयोग की मंदता या कुटिलता देखने में आती है, इस लिये रज कर्म रूप ज्ञानावरणादि कर्मों के अभाव से

भी अरहंत कहलाते हैं। जैसा कि कहा है—

"रजो हननाद्वा अरिहंतः, ज्ञानदृगावरणानि रजांसीव बहिरङ्गान्तरंगाशेषत्रिकालगोचरानन्तार्थव्यंजन-परिणामात्मकवस्तुविषयबोधानुभवप्रतिबंधकत्वाद्र—जांसि। मोहोऽपि रजः; भष्मरजसा पूरिताननानामिव भूयो मोहावरुद्धात्मनां जिह्मभावोपलम्भात्"

धवल सिधान्त

अथवा—रहस्य अन्तराय कर्म का नाम है, उस के क्षय से भी अरहंत नाम कहा जाता है। अंतराय का नाश तीन घातिया कर्मों के नाश के साथ ही नियम से होता है, इस लिये अविनाभाव सम्बन्ध से यह अर्थ निकला कि—जिनने चार घातियां कर्मों का नाश कर अघातिया कर्मों को भी निःशक्त कर दिया है वे अरहंत कहलाते हैं।

"रहस्यमन्तरायः, तस्य शेषघातित्रितयविनाशाविनाभाविनो भ्रष्ट बीजवन्निःशक्तीकृताघातिकर्मणो हननादरिहंतः।"

धवल सिद्धान्त

अथवा—"णमो अरुहंताणं" ऐसा भी पाठ देखने में आता है। रुह धातुका अर्थ अंकुर उगना होता है। सो जिनका भव रूप अंकुर अब नहीं उगेगा, उन्हें अरुहंत कहते हैं। क्यों कि कर्मरूप बीज के जल जाने पर फिर संसाररूप अंकुर पैदा नहीं होता है, कहा है—

"न रोहति भूयः संसारे समुत्पद्यते, इत्यरुहः, संसार कारणानां कर्मणांनिर्मूलकायं कषित त्वात्॥

भगवती सूत्र और प्रवचन सारोद्धार

कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति नवांकुरः
"दग्धे बीजे यथात्यंतं; प्रादुर्भवति नांकुरः।

राजवातिक और तत्वार्थ सार

उक्त प्रकार के अरहंतों को नमस्कार हो।

नोट्स में प्रकाशनार्थ लेखक हीरालाल जैन शास्त्री उज्जैन

~~णमोकार मंत्र का अर्थ~~

अरहंत का अर्थ

सारी जैन समाज में; चाहे वह दिगम्बर हो या श्वेताम्बर; मंदिरमार्गी हो, या स्थानक वासी; णमोकार मंत्र अपना खास स्थान रखता है। बच्चों से लेकर वृद्ध तक नित्य ही बड़ी भक्ति के साथ इसका त्रिकाल-स्मरण करते हैं। आचार्यों ने इसे अनादिमूल मंत्र और करोड़ों श्लोकों वाले दृष्टिवाद अंग का सार कहा है। सचमुच जब हम इसके प्रत्येक पद के अर्थ की गंभीरता से देखते हैं, तो हमें आचार्यों के उक्त कथन का महत्व दृष्टि गोचर हुए बिना नहीं रहता। इसके प्रभाव से परम पद प्राप्त करने वालों की कथाओं से अनेकों शास्त्र भरे पड़े हैं। महर्षियों ने ठीक ही कहा है कि—

एसो पंच णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

अर्थात यह पंच नमस्कार मंत्र सर्व पापों का नाश करने वाला है और सभी मंगलों में प्रथम मंगल है।

~~णमोकार मंत्र के प्रत्येक~~ प्रथम पद के अर्थ का ~~क्रमशः सप्रमाण और समुचित विचार करते हुए, पहिले~~ यहां पर नाना पाठभेदों और विविध अर्थों के साथ उपलब्ध होने वाले प्रथम पद का अर्थ करते हैं-

'णमो अरहंताणं' 'अरहंत' यह प्राकृत भाषा का शब्द है, जिसकी संस्कृत छाया अर्हत्, अरहोन्तर, अरथान्त, और अरहयत् होती है। यहां चारों ही अर्थों पर विचार किया जाता है:—

(१) 'अर्ह' धातु, योग्य होना या पूजा के योग्य होना' इस अर्थ को प्रगट करती है। इस अर्थ के अनुसार' अतिशय युक्त पूजा के योग्य होने से 'अरहंत' कहलाते हैं। क्योंकि गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण कल्याणकों में देवों द्वारा की गई पूजायें, देव, असुर, और मानवों को प्राप्त पूजाओं से अधिक हैं, अतिशय युक्त हैं; इसलिए अतिशयों के योग्य होने से 'अरहंत' यह नाम यथार्थ है।

जैसा कि धवल सिद्धान्त में कहा है—

" अतिशय पूजार्हत्वाद्वार्हन्तः। स्वर्गावतरण-जन्माभिषेक-परिनिष्क्रमण-केवलज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाणेषु देवकृतानां पूजानां देवासुर मानवप्राप्तपूजाभ्योऽधिकत्वादतिशयानामर्हत्वाद्योग्यत्वादर्हन्तः।"

अरिहंति वंदण णमंसणाणि, अरिहंति पूयसक्कारं।
अरिहंति सिद्धिगमणं अरहंता तेण उच्चंति ॥६४॥

मूलाचार

अरिहंत वंदण णमंसणाणि, अरिहंति पूयसक्कारं।
~~अरिहंती~~ सिद्धिगमणं च अरिहा, अरहंता तेण वुच्चंति॥ ॥९३१॥

विशेषावश्यकभाष्य

अर्थात् — वन्दना और नमस्कार के योग्य हैं, पूजा और सत्कार के योग्य हैं, और सिद्धि गमन के योग्य हैं इसलिए अरहंत कहे जाते हैं।

(२) 'रह' नाम एकान्त या गोप्य का है, जो समस्त निकटवर्ती, दूरवर्ती, सूक्ष्म और स्थूल पदार्थों के समूह को प्रत्यक्ष — हस्तामलकवत् देखने जानने से जिनके कुछ भी एकान्त या गुप्त नहीं रहा है इस कारण से भी 'अरहंत' ऐसा नाम यथार्थ है।

" न विद्यते रह एकान्तो गोप्यमस्य, सकल सन्निहितव्यवहित-स्थूलसूक्ष्मपदार्थसार्थसाक्षात्कारित्वादित्यरहः "

' स्थानाङ्गसूत्र '

' अविद्यमानं रह एकान्तरूपो देशोऽन्तश्च मध्यं गिरिगुहादीनां सर्ववेदितया समस्तवस्तुस्तोमगतप्रच्छन्नत्वस्याभावेन येषां तेऽरहोन्तरः ॥

' भगवती सूत्र '

(३) 'अरहंत' इस प्राकृत शब्द की 'अरथान्त' ऐसी भी संस्कृत छाया होती है, जिसके अनुसार यह अर्थ निकलता है कि —

रथ अर्थात् प्रकृत में उपलक्षण से 'समस्त परिग्रह' उसका जिनके सर्वथा विनाश हो गया है, ऐसे वीतराग सर्वज्ञ देव को 'अरहंत' कहते हैं।

" अविद्यमानो रथः स्यन्दनः सकलपरिग्रहोपलक्षणभूतः, अन्तश्च विनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषां तेऽरथान्ताः "

' भगवती सूत्र '

अथवा — जिनका आत्मारूपी रथ, अप्रतिहतशक्तिवाला — अनन्तवीर्य वाला होने से कहीं रुक नहीं सकता, अर्थात् त्रैलोक्य और अलोक को भी जानता है, इस कारण से भी 'अरहंत' ऐसी संज्ञा सार्थक मानी गई है।

(४) 'अरहंत' शब्द का 'अरहयत्' अर्थ भी होता है, जिसके अनुसार यह अर्थ निकलता है 'राग-द्वेष के कारण भूत त्रैलोक्यवर्ती अनन्त पदार्थों के ज्ञाता द्रष्टा होने पर भी किसी भी पदार्थ में आसक्त नहीं होने वाले अर्थात् अपना वीतरागी स्वभाव नहीं छोड़ने वाले होने से अरहंत कहलाते हैं —

" क्वचिदपि - आसक्तिमगच्छत्सु क्षीणरागत्वात् प्रकृष्टरागादिहेतुभूतमनोज्ञेतर विषय सम्पर्केऽपि वीतरागत्वादिकं स्वस्वभावं अत्यजन्तोऽर्हन्तः "। 'भगवतीसूत्र'

अथवा —

'णमो अरिहंताणं' ऐसा भी पाठ प्रचलित है जिसके अनुसार अर्थ होता है कि 'अरि अर्थात् कर्म शत्रुओं का नाश करने से 'अरिहंत' ऐसा नाम है।

" अरिहननादरिहंतः, नरकतिर्यक्कुमानुष प्रेतावासगताशेष दुःख प्राप्तिनिमित्तत्वादरिर्मोहः । ×× तस्यारेर्हननादरिहंतः "। धवला सिद्धान्त ।

*: अथवा — राग, द्वेष, कषाय, पाँचों इंद्रियों के विषय, परीषह और उपसर्ग इनके विनाशक होने से भी अरिहंत कहे जाते हैं। जैसा कि कहा है —

रागद्दोस कसाए य, इंदियाणि य पंच य ।
परिसहे उवसग्गे णासयंतो णमोरिहा ॥
मूलाचार ।

इंदिय विसय कसाए परीसहे वेयणा उवसग्गे ।
एए अरिणो हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥९१९॥
आवश्यकभाष्य ।

रागद्दोस कसाए य इंदियाणि य पंच विपरीसहे ।
उवसग्गे नामयंता नमोरिहा तेण वुच्चंति ॥
विशेषावश्यकभाष्य ॥

*: मोहरज अंतराए हणण गुणा दो य णाम अरिहंतो ॥
मूलाचार ।

अट्ठविहं पिय कम्मं अरिभूयं होइ सव्वजीवाणं ।
तं कम्ममरिं हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥९२०॥
आवश्यकभाष्य ।

अथवा — रज अर्थात् आवरण के नाश करने से भी अरहंत कहते हैं। क्योंकि ज्ञानावरण दर्शनावरण कर्म रज के समान बाह्य और अन्तरंग समस्त त्रिकाल के विषयभूत, अनन्त अर्थपर्याय और व्यञ्जनपर्याय युक्त, वस्तुओं को विषय करनेवाले ज्ञान और दर्शन को आवरण करने से रज कहे जाते हैं। इसी प्रकार मोह भी रज है। क्योंकि जैसे रज से व्याप्त मुख वाले लोगों में कार्य की मन्दता देखी जाती है, उसी प्रकार मोह से जिनका आत्मा व्याप्त है उनमें भी आत्मोपयोग की मन्दता या कुटिलता देखने में आती है। इसलिए रज स्वरूप ज्ञानावरणादि कर्मों के अभाव से भी 'अरहंत' संज्ञा यथार्थ है। जैसा कि कहा है —

" रजो हननाद्वा अरिहंत: । ज्ञानदृगावरणानि रजांसीव बहिरंगान्तरंगाशेष त्रिकालगोचरानन्तार्थव्यञ्जनपरिणामात्मकवस्तु विषयबोधानुभव प्रतिबंधकत्वाद्रजांसि । मोहोऽपि रज:, भस्मरजसा प्रतिताननानामिव भूयो मोहावरुद्धात्मनां जिह्मभावोपलम्भात् "।

'धवल सिद्धान्त'

अथवा — रहस्य अन्तराय कर्म का नाम है, उसके क्षय से भी अरहंत नाम कहा जाता है। अन्तराय का विनाश तीन घातिया कर्मों का अविनाभावी है अर्थात् तीन घातिया कर्मों के नाश होने के साथ ही नियम से अन्तराय कर्म का नाश होता है, सो जिस समय अन्तराय के नाश का उल्लेख किया गया कि उसके पूर्ववर्ती तीन घातिया कर्मों का नाश तो स्वत: सिद्ध हो जाता है, इसलिए भी अन्तराय के विनाश करने से अरहन्त नाम पड़ना यथार्थ ही है। जैसा कि कहा है —

"रहस्यमन्तराय:, तस्य शेष घाति त्रितय विनाशाविनाभाविनो भ्रष्ट बीजवन्नि:शक्तीकृताघातिकर्मणो हननादरिहन्त:"।

'धवल सिद्धान्त'

अथवा —

'णमो अरुहंताणं', ऐसा भी पाठ देखने में आता है, यह पाठ प्राय: श्वेताम्बरों के प्रसिद्ध सूत्रागमों में उपलब्ध है। 'रुह' धातु का अर्थ 'अंकुर उगाना' होता है, सो जिनका भव अर्थात् जन्म रूप अंकुर अब नहीं उगेगा उन्हें अरुहंत कहते हैं क्योंकि कर्मरूप बीज के जल जाने पर फिर -

संसार रूप अंकुर नहीं पैदा होता है। जैसा कि कहा है—
'न रोहति, भूयः संसारे समुत्पद्यते, इत्यरुहः, संसार-कारणानां कर्मणां निर्मूलिकाषं कषितत्वात्।

भगवती सूत्र और प्रवचन सारोद्धार

दग्धे बीजे यथात्यन्तं प्रादुर्भवति नांकुरः।
कर्मबीजे तथा दग्धे न रोहति भवांकुरः॥

राजवार्तिक और तत्त्वार्थसार।

—— o ——

मूलेन्दु भवन विनोदमिल्स उज्जैन
२३/७/३६

श्रीमान् प्रिय पंडित जी सा०

सस्नेह जय जिनेन्द्र.

[illegible] आपके द्वारा भेजे गए 'जैन सिद्धान्त भास्कर' और ग्रन्थ सूची की प्राप्ति से बहुत आनंद प्राप्त हुआ. एतदर्थ आपको कोटिशः धन्यवाद.

लिखे अनुसार 'अर्हंत का अर्थ' शीर्षक एक लेख भेजता हूं. आशा है यह निकट भविष्य में प्रगट होने वाले भास्कर में प्रकाशित हो जायगा.

आज दिन श्री धवल के १०० पत्र वापिस भेजे हैं रजिस्टरी से, सो आपको मिलने पर पहुंच से सूचित करें। आगे भी जब आवश्यकता होगी, तब देखा जायगा। इस प्रति में अनेकों स्थलों पर पाठ छूट गया है जिसे मैंने कई स्थलों पर तो लाल स्याही से नोट कर दिया है, समयाभाव से बहुत कुछ न कर सका। अब तो इसके प्रकाशन की शीघ्र योजना हो रही है जिससे लेखन सम्बन्धी सभी अशुद्धियां दूर हो जावेंगी।

सेठ लक्ष्मीचंद्र जी को बहुत शीघ्र ग्राहक बना कर मनीआर्डर भिजवाऊंगा. [illegible] भी प्रयत्न करूंगा. पर इनको ग्राहक होने तो निश्चित समझिए. नवीन लेख से सूचित कीजिएगा। जिस अंक में लेख प्रगट हो अवश्य भेजें। यदि भास्कर सदा आता होगा, तो मैं भी नियम बद्ध लेख देता रहूंगा।

भवदीय—
हीरालाल